श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा गुरुदेवश्री के प्रवचन में से निकाले गये प्रश्नोत्तर

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के हिन्दी भाषा के अन्तिम प्रवचन आत्मा की 47 शक्तियों में सर्वदर्शित्व व सर्वज्ञत्व शक्ति पर कुछ प्रश्नोत्तर :

जिनेश शेठ, मुम्बई शास्त्री प्रथम वर्ष उम्र 17 वर्ष

प्र. 1 अंशदृष्टि क्या है? गुरुदेवश्री के शब्दों में स्पष्ट करें।

उत्तर : आत्मा में अनन्त गुण हैं। उनमें कोई भी गुण विकार रूप नहीं है। उन गुणों की पर्याय में विकार होता है। वो अंश है और उसकी दृष्टि अंशदृष्टि है। इसको पर्यायदृष्टि भी कहते हैं। जो अंशदृष्टि करता है उसका संसार में परिभ्रमण होता है।

अभिषेक जैन, वरिष्ठ उपाध्याय उम्र 16 वर्ष

प्र. : 2. स्वर्ग से मोक्ष उत्तम क्यों है?

उत्तर :– मोक्ष का सुख स्वर्ग से उत्तम इसलिए है कि वह 'रागरहित' विकल्प रहित, मन रहित और मान रहित, अपनी आत्मा को जानने से होता है इसलिए स्वर्ग का सुख से मोक्ष का सुख उत्तम है।

शुभम जैन, वरिष्ठ उपाध्याय उम्र 16 वर्ष

प्र. : 3. दर्शन गुण व ज्ञानगुण किसे कहते हैं?

उत्तर : वस्तु के सामान्य अवलोकन को दर्शन कहते हैं। वस्तु के विशेष प्रतिभास को ज्ञान कहते हैं। छद्मस्थ जीवों को पहले दर्शन होता है तत्पश्चात ज्ञान होता है और केवली भगवान को दर्शन ज्ञान एक साथ होते हैं।

विकास जैन, वरिष्ठ उपाध्याय उम्र 16 वर्ष

प्र. : 4. वीतराग धर्म कैसा है?

उत्तर : वीतराग धर्म ही निश्चय धर्म है, प्रामाणिक धर्म है, सच्चा धर्म है, वास्तविक धर्म है, जो परमसुखरूप दशा है, अनाकुल दशा है वही वीतराग धर्म है।

विकास जैन, बड़ा मलहरा, वरिष्ठ उपाध्याय, उम्र 17 वर्ष

प्र . : 5. सर्वदर्शित्व व सर्वज्ञत्व शक्ति लोकालोक को जानती है फिर भी पररूप क्यों नहीं होती?

उत्तर : यह दोनों शक्ति आत्ममयी है। यद्यपि यह दोनों शक्ति लोकालोक के सामान्य और विशेष भाव को जानती पर लोकमय नहीं होती। जिसप्रकार दर्पण के सामने जो भी आता है, वह उसको झलकाता है, उसी प्रकार यह लोकालोकमयी सामान्य विशेष भाव ज्ञेयाकार आत्मा में झलकते हैं। पर यह आत्मा ज्ञेयाकार नहीं होता।

विभिन्न विषयों पर गुरुदेवश्री के प्रवचनों में से 5 अन्य प्रश्नोत्तर

विषय : निमित्त उपादान

पवन जैन, मुम्बई शास्त्री प्रथम वर्ष उम्र 17 वर्ष

प्र. 1. निमित्त किसे कहते हैं?

उत्तर : जो पदार्थ स्वयं तो कार्यरूप न परिणमें, परन्तु कार्य की उत्पत्ति में अनुकूल होने का आरोप जिस पर आ सके, उस पदार्थ को निमित्त कारण कहते हैं। जैसे – घट की उत्पत्ति में कुम्भकार, दण्ड, चक्र आदि (निमित्त सच्चा कारण नहीं है, अहेतुक है, व्यवहार मात्र है।)

विषय : षट्कारक

विवेक गडेकर, हिवरखेड महाराष्ट्र शास्त्री तृतीय वर्ष उम्र 20 वर्ष

प्र. 2. कारक किसे कहते हैं? कौन–कौन से हैं?

उत्तर : जिसका क्रिया के साथ सीधा संबंध हो अथवा जो क्रिया का जनक हो, उसे कारक कहते हैं। कारक छह होते हैं। कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण।

नवीन जैन, उज्जैन (म.प्र.) शास्त्री तृतीय वर्ष उम्र 20 वर्ष

प्र. : 3. संबंध और संबोधन कारक क्यों नहीं?

उत्तर : संबंध और संबोधन का क्रिया के साथ सीधा संबंध नहीं है अतः वे कारक नहीं है। जैसे – राम का भाई लक्ष्मण घर जाता है। इसमें राम का क्रिया के साथ कोई संबंध नहीं है।

हर्षित जैन, खनियांधाना (म.प्र.) शास्त्री प्रथम वर्ष उम्र 17 वर्ष

प्र. 4. मोक्षतत्त्व सम्बन्धी भूल क्या है?

उत्तर : यह जीव स्वर्ग के सुख के समान मोक्ष के सुख को मानता है। अरहन्त सिद्ध परमेष्ठी के स्वरूप को नहीं जानता। यह मोक्ष तत्व सम्बन्धी भूल है।

सनत जैन, बक्स्वाहा (म.प्र.) शास्त्री तृतीय वर्ष उम्र 20 वर्ष

प्र. 5. अतीन्द्रिय आनन्द का धाम क्या है?

उत्तर : राग मन्द करे तो पुण्य हो और उस पुण्य का फल स्वर्ग है। आत्मा निज को जानें, निज आनन्द में लीन रहे वही वास्तव में अतीन्द्रिय आनन्द का धाम है। स्वर्ग आनन्द का धाम नहीं है।